Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **03.02.17** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

आज जबकि इस्लाम को प्रत्येक स्थान पर बदनाम किया जा रहा है

स्वयं मुस्लिम देशों में मुसलमान, मुसलमान के ख़ून का प्यासा है तथा मुसलमानों के कर्म इस्लाम की शिक्षा से दूर जा चुके हैं

ऐसे में हम अहमदियों ने ही दुनया को इस्लाम की सुन्दर शिक्षा से परिचित करना है

और इसके लिए सबसे आवश्यक बात अल्लाह तआला से सम्बंध पैदा करना है

जलसा सालाना बंगला देश तथा सीरालियोन के अवसर पर जलसे में सम्मिलित लोगों को मूल्यवान उपदेश

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज बंगला देश का जलसा सालाना आरम्भ हो रहा है। अबकी बार इनके जलसा सालाना में मैंने सम्बोधन नहीं करना था इस लिए इन्होंने निवेदन किया कि ख़ुत्बः में ही इस हवाले से कुछ बातें कर दें। अल्लाह तआला की कृपा से बंगला देश की जमाअत भी बड़ी निष्ठावान जमाअत है। यह भी वह देश है जिसमें वहाँ के अहमदियों ने जीवन की बलि भी दी है। लगभग बारह तेरह शहीद हुए, कठिनाईयाँ भी झेलीं तथा झेल रहे हैं परन्तु अहमदियत तथा वास्तविक इस्लाम पर ईमान और आस्था में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बड़े पक्के हैं। अल्लाह तआला इनके ईमान और आस्था में सदैव प्रगति देता चला जाए। इसी प्रकर सीरालियोन में भी आज जलसा सालाना आरम्भ हुआ है तथा वहाँ भी उनको मौसम के कारण कुछ कठिनाई थी तथा कुछ सैक्योरिटी की विषमताएँ थीं। उन्होंने भी दुआ को कहा तथा जलसे को हर प्रकार से बरकत वाला बनने के लिए कहा, अल्लाह तआला उसको भी बरकतें प्रदान करे।

हमें सदैव याद रखना चाहिए कि जिस उद्देश्य के लिए ये जलसे आयोजित किए जाते हैं, उस उद्देश्य की रूह को हम समझने वाले हों तथा फिर प्राप्त करने वाले हों, चाहे वह विश्व के किसी देश में हो। बंगला देश में अथवा सीरालियोन में या अफ्रीक़ा में अथवा कहीं और भी। और वह उद्देश्य क्या है? वह उद्देश्य यह है जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न अवसरों पर जलसे के विषय में बयान फ़रमाया है। मुझे आशा है कि जलसे के उद्घाटन के अवसर पर बंगला देश वाले भी, सीरालियोन वाले भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों को सुन चुके हैं। दुनया के प्रत्येक अहमदी को हर समय यह उद्देश्य अपने सम्मुख रखना चाहिए क्यूँकि यह केवल तीन दिन का उद्देश्य नहीं है अपितु एक अहमदी मुसलमान के पूरे जीवन का उद्देश्य है। अतः हमें सदैव अपने सामने रखना चाहिए इस उददेश्य को। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने

फ़रमाया कि जलसे का उद्देश्य एक यह है कि संयम और तक़्वा पैदा हो। अब यह कोई अस्थाई चीज़ नहीं है, निरन्तर रहने वाली चीज़ है। फिर जलसे पर आना तुम्हारे अन्दर अल्लाह तआला के भय का वास्तविक आभास दिलाने वाला हो। यह भी एक स्थाई चीज़ है अर्थात ऐसा भय जो केवल भयभीत होकर डरने वाला भय नहीं अपितु अपने प्यारे की अप्रसन्नता का भय हो। फिर यह कि जलसे पर आना तथा आध्यात्मिक वातावरण एक दूसरे के लिए दिलों में नर्मी पैदा करने वाला हो। अल्लाह तआला की मुहब्बत को प्राप्त करने के लिए एक दूसरे के प्रति स्नेह को बढ़ाने वाला हो। परस्पर ऐसा बन्धुत्व उत्पन्न हो जाए जिस पर दुनया रश्क करे कि ऐसे नमूने ही वास्तविक इस्लामी शिक्षा की अभिव्यक्ति हैं।

आप अलैहिस्सलाम ने इस बात की आवश्यकता का भी आभास कराया कि आपके मानने वाले विनम्रता एवं विनयता दिखाने वाले हों। अहंकार एवं घमंड को अपने भीतर से पूर्णतः निकाल दें। आज जबकि इस्लाम को प्रत्येक स्थान पर बदनाम किया जा रहा है। स्वयं मुस्लिम देशों में मुसलमान, मुसलमान के ख़ून का प्यासा है तथा मुसलमानों के कर्म इस्लाम की शिक्षा से दूर जा चुके हैं। ऐसे में हम अहमदियों ने ही दुनया को इस्लाम की सुन्दर शिक्षा से परिचित कराना है और इसके लिए सबसे आवश्यक बात अल्लाह तआला से सम्बंध पैदा करना है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह जलसा इस लिए आयोजित किया जाता है कि इस वातावरण में रहकर अर्थात इन तीन दिनों में जो वातावरण उत्पन्न होता है उसमें रहकर अपने ज़ंग उतारें, दिलों के ज़ंग उतारें। आस्था की दृष्टि से निःसन्देह बड़े सुदृढ़ हैं यहाँ के रहने वाले अहमदी, और जैसा कि मैंने कहा कि मैंने वर्णन किया, इसके लिए बंगला देश के अहमदियों ने जीवन बलिदान किए हैं परन्तु अल्लाह तआला हममें से प्रत्येक से यह चाहता है कि इस्लाम के इस पुर्नोद्धार के ज़माने में अपने कर्मों को भी उत्तम स्तरों पर लेकर जाएँ। नमाज़ों की पाबन्दी अल्लाह तआला की बताई हुई रीति के अनुसार करें। अपनी नमाज़ों में नमाज़ों की आत्मा को स्थापित करने का प्रयास करें। इस विषय पर पिछले दो ख़ुत्बों में बड़े विस्तार से बयान कर चुका हूँ। बन्दों के अधिकारों की अदायगी, अपनी सम्पूर्ण प्रतिभाओं के साथ अदा करें। जैसा कि वर्णन हुआ जलसे के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य संयम और तक़्वा पैदा करना है। तक़्वा के बारे में व्याख्या करते हुए एक स्थान पर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि-

तक़्वा का अर्थ है बदी की सूक्ष्म राहों से बचना, परन्तु याद रखो नेकी इतनी नहीं कि एक व्यक्ति कहे कि मैं नेक हूँ इस लिए मैंने किसी का माल नहीं लिया, किसी को लूटा नहीं, किसी का धन हड़प नहीं किया, किसी के अधिकारों का हनन नहीं किया, सेन्ध नहीं लगाई, चोरी नहीं करता, बुरी नज़र से नहीं देखता तथा व्यभिचार नहीं करता। ऐसी नेकी एक आरिफ़ (ख़ुदा के मित्र) की दृष्टि में हंसी की बात है, यह कोई नेकी नहीं है यह तो परिहास है क्यूँकि यदि वह इन बुराईयों में लिप्त हो तथा चोरी अथवा डाका मारे तो वह दंड पाएगा। अतः यह कोई नेकी नहीं जो एक आरिफ़ के विचारानुसार सम्मान योग्य हो बल्कि असल और वास्तविक नेकी यह है कि मानव जाति की सेवा करे तथा अल्लाह तआला की राह में सम्पूर्ण निष्ठा एवं वफ़ादारी दिखलाए तथा उसके मार्ग में जान तक दे देने को तय्यार हो। इसी कारण से यहाँ बयान फ़रमाया कि إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ अर्थात, अल्लाह तआला उनके साथ है जो बुराई से बचते हैं तथा साथ ही नेकियाँ भी करते हैं।

दुआ का यथार्थ बयान करते हुए एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

दुआ वह अकसीर है जो एक मुट्ठी धूल को कीमिया कर देती है। एक मिट्टी लो वह दुआ से सोना बन जाती है, ऐसा प्रभाव होना चाहिए दुआ में, और वह एक पानी है जो भीतरी मैल को धो देता है, परन्तु कैसी दुआ? फ़रमाया कि उस दुआ के साथ आत्मा पिघलती है। ऐसी दुआ जो दिल से निकल रही हो और रूह पिघलती हो उसके द्वारा। और पानी की भांति बहकर अल्लाह तआला की चौखट पर गिरती है, अल्लाह के समक्ष पेश होती है। वह ख़ुदा के आगे ख़ड़ी भी होती है और रुकूअ भी करती है और सजदा भी करती है तथा उसी की छवि वह नमाज़ है जो इस्लाम ने सिखलाई है। यदि नमाज़ का यथार्थ ज्ञात करना है कि क्या वास्तविकता है तो फिर वह नमाज़ है जिसके द्वारा ख़ुदा मिलता है। लोग कहते हैं बड़ी नमाज़ें पढ़ी हैं, अल्लाह नहीं मिला तो यह अवस्था पैदा करने की आवश्यकता है और इस्लाम की शरीअत ने इसका चित्रण नमाज़ में करके दिखलाया है ताकि वह शारीरिक नमाज़, रूहानी नमाज़ की भांति सक्रिय हो क्यूँकि ख़ुदा तआला ने इंसान के अस्तित्व की ऐसी बनावट पैदा की है कि आत्मा का प्रभाव शरीर पर तथा शरीर का आत्मा पर अवश्य होता है। यदि प्रत्यक्ष रूप से केवल क़याम किया, रुकूअ किया, सजदे किए नमाज़ों में, तो इसका कोई लाभ नहीं है जबतक कि उसके साथ यह प्रयास शामिल न हो कि आत्मा भी अपने आप में क़याम और रुकूअ तथा सजदों से कुछ अंश ले तथा यह अंश लेना मअरिफ़त पर आधारित है और मअरिफ़त अल्लाह की कृपा पर आधारित है। अतः आपने एक स्थान पर फ़रमाया, इसकी व्याख्या की तथा स्पष्ट किया कि-

फ़ज़्ल जो है, यह मिलता तो अल्लाह की कृपा से है सब कुछ, इस लिए फ़ज़्ल की प्राप्ति के लिए भी अल्लाह तआला के आगे झुको, उसी से माँगो और जब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यह मअरिफ़त प्राप्त हो तब ही वास्तविक नमाज़ भी अदा होती है और इसके लिए संघर्ष एवं परिश्रम की आवश्यकता है, निरन्तर प्रयास की आवश्यकता है। जब संघर्ष होगा तब ही जीवन का उद्देश्य भी प्राप्त होगा।

फ़रमाया- असल बात यह है कि सबसे कठिन एवं कोमल बात बन्दों के अधिकार ही हैं। लोग नमाज़ें पढ़ लेते हैं, मस्जिदों में भी आ जाते हैं, चन्दे भी दे देते हैं, कई बार जान की क़ुर्बानी भी दे देते हैं परन्तु कई बार ऐसे अवसर भी आते हैं कि लोगों के अधिकार देना बड़ा कठिन हो जाता है। अतः इस अवसर पर बड़ी सावधानी से क़दम उठाना चाहिए। फ़रमाया कि मेरा तो मज़हब यही है कि शत्रु के साथ भी एक सीमा से अधिक कठोरता न हो। कुछ लोग चाहते हैं कि जहाँ तक हो सके उसके विनाश और पतन के लिए प्रयास किया जाए, प्रयत्न किया जाए कि दुश्मन को नष्ट कर दें। फिर वे इस चक्कर में पड़ कर उचित तथा अनुचित का भी ध्यान नहीं रखते। उसको बदनाम करने के लिए झूठा आरोप उस पर लगाते हैं, मनघड़त बातें करते हैं तथा उसकी ग़ीबत करते हैं तथा दूसरों को उसके विरुद्ध उकसाते हैं। अब बताओ कि थोड़ी सी दुश्मनी से कितनी बुराईयों का तथा बदियों का वारिस बना और फिर ये बदियाँ जब अपने बच्चे देंगी तो कहाँ तक बात पहुंचेगी। फ़रमाया कि मैं सच कहता हूँ कि तुम किसी को अपना व्यक्तिगत दुश्मन न समझो तथा इस द्वेष की प्रवृत्ति को पूर्णतः छोड़ दो, यदि ख़ुदा तआला तुम्हारे साथ है तथा तुम ख़ुदा तआला के हो जाओ तो वह दुश्मनों को भी तुम्हारे सेवकों में दाख़िल कर सकता है परन्तु यदि तुम ख़ुदा ही से सम्बंध विच्छेद किए बैठे हो तथा उसके साथ ही कोई सम्बंध दोस्ती का शेष

नहीं, उसकी अवज्ञा तुम्हारा चलन है, उसकी इच्छा के विरुद्ध तुम्हारा चाल चलन है फिर ख़ुदा से बढ़कर तुम्हारा दुश्मन कौन होगा। सृष्टि की शत्रुता से मनुष्य बच सकता है परन्तु जब ख़ुदा दुश्मन हो तो फिर यदि सारी सृष्टि भी मित्र हो तो कुछ नहीं हो सकता। इस लिए तुम्हारा चलन नबियों के जैसा चलन हो। ख़ुदा तआला की इच्छा यही है कि व्यक्तिगत शत्रुता कोई न हो, कोई ज़ाती दुश्मनी न हो। फ़रमाया- ख़ूब याद रखो कि इंसान को उच्च श्रेय और सत्यमार्ग तभी मिलता है जब वह व्यक्तिगत रूप से किसी का दुश्मन न हो। हाँ अल्लाह और उसके रसूल के सम्मान के लिए अलग बात है। अल्लाह और उसके रसूल की प्रतिष्ठा का प्रश्न आता है तो वहाँ दुश्मनी पैदा हो जाती है अर्थात जो कोई व्यक्ति ख़ुदा और उसके रसूल का सम्मान नहीं करता बल्कि उनका दुश्मन है, उसे तुम अपना दुश्मन समझो। इस दुश्मनी समझने का यह अर्थ नहीं है कि तुम उसके विरुद्ध झूठ घड़ो तथा अकारण ही उसको दुःख देने की योजनाएँ बनाओ। नहीं, बल्कि उससे अलग हो जाओ। दुश्मन है इस लिए अलग हो जाओ तथा ख़ुदा तआला के हवाले कर दो मामला। सम्भव हो तो उसके सुधार के लिए दुआ करो, सम्भव हो दुश्मन के सुधार हेतु उसके लिए दुआ करो। अपनी ओर से कोई नई भाजी उसके साथ शुरु न करो अर्थात कोई नया झगड़ा शुरु न कर दो उसके साथ। फ़रमाया कि ये बातें हैं जो मन की पवित्रता से सम्बंधित हैं। कहते हैं कि हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हु एक दुश्मन से लड़ते थे तथा केवल ख़ुदा तआला के लिए लड़ते थे। अन्ततः हज़रत अली रज़ीअल्लाहु अन्हु ने उसको अपने नीचे गिरा लिया तथा उसके सीने पर चढ़ बैठे। उसने झट हज़रत अली के मुंह पर थूक दिया। आप तुरन्त उसकी छाती पर से उतर आए और उसे छोड़ दिया, इस लिए कि अब तक तो मैं केवल ख़ुदा तआला के लिए तेरे साथ लड़ता था परन्तु अब जबकि तू ने मेरे मुंह पर थूक दिया है तो मेरे अपने अहं का भी कुछ अंश इसमें शामिल हो जाता है। अतः मैं नहीं चाहता कि अपनी मनोवृत्ति के लिए तुम्हारी हत्या करूँ। इससे साफ़ मालूम होता है कि आपने अपनी मनोवृत्ति के शत्रु को दुश्मन नहीं समझा। ऐसी प्रकृति एवं आदत अपने भीतर पैदा करनी चाहिए। यदि स्वार्थ तथा व्यक्तिगत उद्देश्य के लिए किसी को कष्ट देते तथा शत्रुता के क्रम को विस्तृत करते हैं तो इससे बढ़कर ख़ुदा तआला को अप्रसन्न करने वाली बात और क्या होगी।

अतः किसी व्यक्तिगत द्वेष के कारण किसी को कष्ट नहीं देना तथा अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मन को अपना दुश्मन समझो, वहाँ से उठ जाओ, उसके लिए दुआ करो, उसके सुधार के लिए प्रयास करो तथा उसके आक्रमण का जवाब दो, जो उचित तरीक़े हैं उनके द्वारा, परन्तु यह नहीं कि उसकी प्रत्येक बात को बुरा समझते हुए सम्पूर्ण रूप से अनुचित ढंग से दुश्मनी पे उतर आओ, यह सब अनुचित है।

अल्लाह तआला हमें तक़्वा का वास्तविक बोध एवं आभास प्राप्त करने का सामर्थ्य प्रदान करे तथा अपनी कृपा करते हुए अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने वाली हमारी नमाज़ें तथा इबादतें हों। बन्दों के हक़ की अदायगी की बारीकी को समझने वाला हमें बनाए अल्लाह तआला। हमारा प्रत्येक कर्म चाहे वह सांसारिक हो, इस धारणा के साथ हो कि हमने अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्रत्येक दशा में प्राप्त करना है तथा प्राथमिकता देनी है। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।